Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव

मदालसा मणि त्रिपाठी

शोधार्थी, हिंदी विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, दोइमुख ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश

Article Info
Volume 3, Issue 5
Page Number: 80-84
Publication Issue :
September-October-2020

Article History
Accepted : 01 Oct 2020
Published : 10 Oct 2020

शोध-सार:- बाज़ार और भोगवादी संस्कृति ने वैश्वीकरण को जन्म दिया है। आज के समय में इसके प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता । यह सभी तरह के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आदि पहलुओं को छूता है। वर्तमान में कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जो इससे अछूता हो। भारतीय संस्कृति पर तो खासकर इसके प्रभाव बखूबी देखने लायक हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में मैंने वैश्वीकरण के इसी प्रभाव को भारतीय संस्कृति के संदर्भ में देखने का प्रयास किया है। इसके सभी पहलुओं का पूर्ण रूप से विश्लेषण किया है।

मूल-शब्द:- संस्कृति, वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण, मूल्य, देश, विश्व, विज्ञापन।

प्राचीनता और आधुनिकता की टकराहट भारत के सभी समाजों और संस्कृति में दिखाई पड़ती है। वरिष्ठ भारतीय संस्कृति विभिन्नता में एकता को धारण करके बहती रहती है। वह शुद्ध रूप में भारतीय इतिहास के अतीत से बहती दिखती है, किन्तु अंग्रेजों के आगमन से उसमें पाश्चात्य संस्कृति का मिलन होता है और इससे वह थोड़ी बहुत परिवर्तित दिखाई पड़ती है।

"वैश्वीकरण" शब्द का प्रयोग अर्थशास्त्रियों के द्वारा 1980 से किया जाता रहा है, हालांकि 1960 के दशक में इसका उपयोग सामाजिक विज्ञान में किया जाता था। वैश्वीकरण को एक सदियों लंबी प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जो मानव जनसंख्या और सभ्यता के विकास पर नजर रखती है, जो पिछले कई वर्षों में नाटकीय ढंग से त्वरित हुई है। वैश्वीकरण के प्रारम्भिक रूप रोमन साम्राज्य, पार्थियन साम्राज्य, हान राजवंश और मंगोल साम्राज्य के समय में पाये जाते थे।

17 वी सदी में वैश्वीकरण एक कारोबार बन गया जब डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई, जो पहला बहुराष्ट्रीय निगम कहलाती है। ब्रिटिश साम्राज्य को इसके पूर्ण आकार और शक्ति के कारण वैश्वीकरण का दर्जा मिला था। इस अवधि के दौरान ब्रिटेन के आदर्शों और संस्कृति को अन्य देशों पर थोपा गया। 19 वी सदी को कभी-कभी "वैश्वीकरण का प्रथम युग" भी कहा जाता है। यह वह काल था, जिसका वर्गीकरण यूरोपीय शाही शक्तियों, उनके

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

उपनिवेशों और बाद में संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच तेजी से बढ़ते अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश के आधार पर किया गया।

विकिपीडिया के अनुसार "वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है। इसे एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन है। वैश्वीकरण का प्रयोग अक्सर आर्थिक वैश्वीकरण के संदर्भ में किया जाता है, अर्थात व्यापार, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, पूंजी प्रवाह और तकनीक के प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में एकीकरण।"[1]

पहले-पहल यही माना जाता रहा है कि हमारी संस्कृति, हमारे भाषा के संस्कार हमारे रक्त में इस कदर घुले होते हैं कि उनकी जड़ों को हिला पाना कठिन होता है, परंतु आज के इस वैश्वीकरण के युग में यह सब मिथ्या साबित हो रहा है। आज हमारे आस-पास का सबकुछ बदल रहा है, हमारे संस्कार, संस्कृति और भाषा बदल रही है। भारत वैश्वीकरण द्वारा प्रारम्भ की गयी सांस्कृतिक अन्तरक्रिया की प्रक्रिया से अछूता नहीं रहा है। भारत में अब उदारीकरण, बजारीकरण, भूमंडलीकरण जैसी आर्थिक प्रवृतियाँ पूरी तरह से फैल चुकी हैं । इसके प्रभाव को रेखांकित करते हुए चिंतक अमित कुमार सिंह का मानना है कि " भूमंडलीकरण ने समूचे विश्व में हाशिएकरण को प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया है । राज्यों को नियंत्रित करने वाली जनता कि शक्ति पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों और उसके समर्थक लॉबी का अप्रत्यक्ष प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है भले वे किसी देश का राजनीतिक नेतृत्व हो या फिर किसी भी देश का समृद्ध आर्थिक प्रतिष्ठान ।"[2]

करीब 200 सालों के साम्राज्यवादी शासन ने हमारी संस्कृति में जो बदलाव लाए उनका प्रभाव अभी तक व्याप्त है। अंग्रेजों के आगमन के पश्चात प्रबुद्ध बंगाली समाज का रहन-सहन, उनका पहनावा सब बदल गया, धोती-कुर्ते कि जगह पैंट-शर्ट ने ले ली, कॉफी, कटलेट ने माछ-भात को मात दे दी थी और धर्म भी बदला जाने लगा था। वैश्वीकरण के चलते उपजे संस्कृति एवं भाषाई संकट में बड़ा उथल-पुथल हुआ। इस वैश्वीकरण के चलते भाषा व संस्कृति का संकट हमारे सामने खड़ा नज़र आता है। वैश्वीकरण में सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव दोनों हैं। व्यक्तिगत स्तर पर वैश्वीकरण जीवन के मानक और जीवन की गुणवता दोनों को प्रभावित करता है।

वास्तव में संस्कृति एक व्यवस्था है, जिसमें हम जीवन के प्रतिमानों, व्यवहार के तरीकों, अनेकानेक भौतिक एवं अभौतिक प्रतीकों, परम्पराओं, विचारों, सामाजिक मूल्यों, मानवीय क्रियाओं और आविष्कारों को शामिल करते हैं। इसका अर्थ यह हुआ की मानव जीवन के दिन-प्रतिदिन के आचार-विचार, जीवन शैली तथा कार्य-व्यवहार ही संस्कृति कहलाती है। यह हमारी संस्कृति ही है, जो हमें एक-दूसरे से अलग करती है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने संस्कृति के संबंध में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि संस्कृति का अर्थ मनुष्य का आंतरिक विकास और उसकी नैतिक उन्नति है, पारंपरिक सद्व्यवहार है और एक-दूसरे को समझने कि शक्ति है।

वस्तुतः भारतीय संस्कृति विश्व की सार्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है, जो हमें उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त होती है। हिन्दी विश्व कोश के अनुसार " संस्कृति उस समुच्चय का नाम है, जिसमें ज्ञान, कला, नीति-विधि, रीति-रिवाज का समावेश रहता है, जिसमें मानुषी समाज को सदस्य के रूप में मानता हैं।"[3] वही हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार संस्कृति कि परिभाषा इस प्रकार है, " विभिन्न शास्त्रों,दर्शन आदि में होने वाले चिंतन, साहित्य, चित्रांकन आदि कलाओं एवं परहित साधन आदि नैतिक आदर्शों तथा व्यापारों को संस्कृति कहा जाता है।"[4] अन्य देशों की संस्कृतियां

तो समय की धारा के साथ-साथ नष्ट होती रही हैं, किन्तु भारतीय संस्कृति आदि काल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई है। इसकी उदारता तथा समन्यवादी गुणों ने अन्य संस्कृतियों को समाहित तो किया है, किन्तु अपने अस्तित्व के मूल को सुरक्षित रखा है तभी तो पाश्चात्य विद्यवान अपने देश की संस्कृति को समझते हुए भारतीय संस्कृति को पहले समझने का परामर्श देते हैं।

संस्कृति के दो भिन्न उप-विभाग होते हैं- भौतिक और अभौतिक । भौतिक संस्कृति उन विषयों से जुड़ी है जो हमारे जीवन के भौतिक पक्षों से संबद्ध हैं, जैसे हमारी वेषभूषा, भोजन, घरेलू सामान आदि। अभौतिक संस्कृति का संबद्ध विचारों, आदर्शों, भावनाओं और विश्वासों से है। इस प्रकार इन दोनों विभागों के संयुक्त विकास से परिष्कार पाकर मनुष्य सुसंस्कृत बनता है। परंतु हर सुसंस्कृत आदमी सभ्य हो ये ज़रूरी नहीं है। संस्कृति सीखी जाती है, यह संचयी होती है। यह परिवर्तनशील होती है जिसमें समय बीतने के साथ ही परिवर्तन होते है। इस परिवर्तन को गतिशीलता के साथ देखना चाहिए, यहाँ परिवर्तन का मतलब यह नहीं है की नए को अपनाने के चक्कर में, अपनी विशेषताएँ खो दी जाएँ, जैसा की आज हमारी संस्कृति के साथ हो रहा है। संस्कृति में प्रत्येक भाग एक-दूसरे पर आश्रित होता है, एक के अस्तित्व के साथ ही दूसरे का वजूद जुड़ा होता है। परंतु आज हर कोई आत्मनिर्भरता और अकेले अपनी पहचान बनाने के इस चूहा दौड़ में अपनी निजता को खोते जा रहे है। उदहारण स्वरूप हमारे देश की सभी हस्तकलाएँ, कपड़ा उद्योग काश्तकारों, मजदूरों, कलाकारों के आपसी भरोसे और योगदान पर निर्भर है, वहाँ अपनापन है एक दूसरे के लिए और समर्पण है अपनी कला के लिए । परंतु विदेशी कपड़ा उद्योग में बस घाटा-मुनाफे का सौदा होता है, वहाँ अपने कार्य अथवा अपने साथियों के लिए कोई समर्पण भाव नहीं है । प्रख्यात वैज्ञानिक प्रो. यशपाल भी भूमंडलीकरण कि अपसंस्कृतिकरण से चिंतित नज़र आते हैं उनका मानना है की " भूमंडलीकरण का अर्थ यह नहीं है कि यह सब लोगों के लिए बराबर है। इसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम' जैसी बात बिलकुल नहीं है। भूमंडलीकरण एक ऐसी स्वेच्छाकारी प्रक्रिया है जिसके नियमों का पालन हमें करना पड़ेगा और हम सबको उसके पीछे चलना पड़ेगा। यह भी तय करेंगी कि हमारी स्थितियाँ कैसी होगी। उन्हे कैसी होनी चाहिए ।"[5] यही से वैश्वीकरण हमारी संस्कृति में घुसता है और अब एक विशेष वर्ग सदियों पुरानी हस्तकला और काश्तकारों की मेहनत पर अपना स्वामित्व बनाने में लगा है, उसका 'पैटेंट' लेने में लगा है, जबकि यह सांस्कृतिक धरोहर सबकी है।

संस्कृति के बिना मनुष्य ही नहीं रहेंगे क्यूंकी सत्य, शिव और सुंदर ये तीन शाश्वत मूल्य हैं जो संस्कृति से निकट से जुड़े हैं। इसकी एक वजह यह भी है की मानव ही संस्कृति का निर्माता है और साथ ही संस्कृति मानव को मनाव बनती है। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि जंगलों में रहते थे, पत्ते खाते थे, मिट्टी के बर्तनों में रसोई बनाते थे लेकिन अपने मौलिक और विशिष्ट गुणों के कारण सुसंस्कृत कहे जाते थे। वही पर आज के वैश्वीकरण में सुसंकृत मनुष्य होने की परिभाषा ही अलग है, अगर आप बड़े बंगले में रहते है, महंगे बर्तनो में खाते है, फ्रिज का पानी पीते है आदि तो आप सुसंस्कृत है। रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार संस्कृति मानव जीवन में उसी तरह व्याप्त है, जिस प्रकार फूलों में सुगंध और दूध में मक्खन। इसका निर्माण एक या दो दिन में नहीं होता, युग-युगांतर में संस्कृति निर्मित होती है।

वैश्वीकरण ने संस्कृति के क्षेत्र में सबसे ज़्यादा नुकसान क्षेत्रियता का किया है। इसने मानव मूल्य बदल दिये है और ग्रामीण भारतीय समाज के लिए कई खतरें भी उत्पन्न किए है। इसी का परिणाम है की वर्तमान में किसानों को पारंपरिक फसलों के स्थान पर निर्यात उन्मुख फसलों के उत्पादन हेतु प्रोत्साहित किया गया। 2011 से 2016 के मध्य लगभग 9 मिलियन लोगों ने ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में प्रवास किया। भारत का जनसंख्या आयोग भले ही यह

कहता रहे कि अगले दो दशकों में भारत गावों का देश नहीं रहेगा, परंतु आज कोरोना महामारी ने इसे झूठा साबित कर दिया क्यूंकी इस संकट में सब गावों की ओर पलायन कर रहें है और ऐसे ही एक झटके की ज़रूरत भारतीय संस्कृति की ओर लौटने के लिए भी है। आज की ये कोरोना महामारी और इसके जैसी कई और अनगिनत महामारियों का विश्व भर में फैलाव वैश्वीकरण का ही प्रमाण है।

आज प्रत्येक गतिविधि संगीत, साहित्य, कला, विज्ञान और दर्शन सभी पर वैश्वीकरण का प्रत्यक्ष प्रभाव दिखलाई पड़ता है जैसे की आज हमारा देश संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर जा रहा है, शहरों में "ओल्ड एज होम" का होना भी अपनेआप में इसका एक प्रमाण है। पश्चिमी देशों और बहुराष्ट्रीय निगमों की समझ साफ है कि अगर उन्हे अपना कोई भी ब्रांड अखिल भारतीय बाज़ार में उतारना है, तो उसे भारतीय संस्कृति को करीब से जानकर, भारतीय लोगों के अनुसार अपना विज्ञापन करना होगा, पिज्जा, मैगी, टॉफी आदि बेचने के लिए भारतीय संस्कृति में बसे माँ के दुलार-प्यार को हथियार बनाना होगा। यह नया सांस्कृतिक स्तर है, जो पिछले 20 वर्षो में सक्रिय हुआ है। यही कारण है की बहुराष्ट्रीय निगम बाज़ारों के रूझानों को जानने के लिए, भारतीय संस्कृति के जानकारों को रखते है। हमारे यहाँ संस्कृति कभी भी बाज़ार का विषय नहीं रही है, फिर भी वैश्वीकरण और निजीकरण के चलते आज पूरे विश्व की निगाह भारत पर है, क्यूंकी आज के समय में भारत विश्व का सबसे बड़ा बाज़ार है। आज भारतीय संस्कृति को इस बाज़ार में बेचा जा रहा है। इस उत्पादन और बाज़ार के संबंध को एन.सी.आर.टी. कि पुस्तक 'वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था' में भलीभाँति स्पष्ट किया गया है, पुस्तक के अनुसार " समान्यतः बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ उसी स्थान पर उत्पाद इकाई स्थापित करती हैं जो बाज़ार के नजदीक हो, जहां कम लागत पर कुशल और अकुशल श्रम उपलब्ध हो और जहां उत्पाद के अन्य कारकों कि उपलब्धता सुनिश्चित हो। साथ ही, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ सरकारी नीतियों पर भी नज़र रखती हैं, जो उनके हितों का देखभाल करती हैं।"[6] जहां एक तरफ वैश्वीकरण ने भारतीय संस्कृति का वर्चस्व कम किया है वही दूसरी तरफ इस उपभोक्तावाद ने भारतीय संस्कृति को विश्व में एक ऊँचा दर्जा दिलाया है। यह दर्जा जनसंख्या, मार्केट और मीडिया ने दिलाया है।

यह ऊँचा दर्जा दिलाने का मुख्य श्रेय भारतीय सिनेमा को जाता है। भारतीय सिनेमा ने भारतीय संस्कृति को विश्व पटल पर रखा है और साथ ही वैश्वीकरण के प्रभाव के चलते उसमें अपनी सहूलियत के हिसाब से बदलाव किए ताकि पर्दे की डिमांड के चलते विश्व पटल पर मुनाफा कमाया जा सके। इससे फायदा यह हुआ की भारतीय संस्कृति विश्व पटल पर पहचानी जाने लगी परंतु उसमें एकरूपता आ गयी, दिखावा आ गया। उदाहरण स्वरूप "दी ग्रेट इंडियन बिग फेट वैडिंग" को हल्दी, मेहंदी, संगीत आदि जैसे बिना सिर-पैर की रस्मों में ऐसा उलझाया गया की आज के समय में भिन्न प्रांतो, प्रदेशों की भिन्न शादियों में फर्क कर पाना मुश्किल हो गया है। आज बंगाली, पंजाबी, मराठी आदि सभी शादियाँ फिल्मी बॉलीवुड के जैसी वैश्विक तो हो गयी है, परंतु इस दौरान उन्होने अपनी क्षेत्रियता की पहचान खो दी है। अब सभी प्रान्तों की शादी एक सी लगती है।

वर्तमान में संस्कृति एवं संसाधनों का अविवेकपूर्ण हस्तांतरण हो रहा है। विकासशील देशों की सांस्कृतिक तथा साहित्यिक अस्मिता दांव पर लगी हुई है। अपसंस्कृति साथ-साथ चल रही है। भारतीय जीवन दृष्टि को पश्चिमी दृष्टिकोण के अनुसार बदला जा रहा है।

भारतीय संस्कृति कोई प्रतिस्पर्धा करने का क्षेत्र नहीं है, कि उसकी तुलना दुनिया के दूसरे देशों की संस्कृति से की जाए और फिर भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता साबित की जाए। अपनी संस्कृति को बजारवादी बनने से रोकना होगा।

संस्कृति को स्थानीय संरक्षण देना होगा। हमारी भारतीय संस्कृति आज संस्कृति से आगे बढ़कर उपभोक्तावादी संस्कृति बनती जा रही है। भारतीय संस्कृति विज्ञापन का बाज़ार बनती जा रही है, सभी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ विभिन्न विज्ञपनों के माध्यम से इस संस्कृति से अपनी निजता ज्यादा सिद्ध करके अपने उत्पाद बेच रहे हैं। संभवतः यही वजह है की बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अथवा संस्थाएं भी बड़े पैमाने पर हमारी संस्कृति से प्रभावित होकर, अपने उत्पादों में बदलाव ल रहे हैं, उन्हे हमारे क्षेत्रीय बाज़ार के लायक बना रहे हैं। उदहारण के लिए- मैकडौनल्ड्स भी भारत में केवल शाकाहारी एवं चिकन उत्पादों की ही बिक्री करता है, बीफ उत्पादों की नहीं, जो विदेशों में प्रचलित है। ऐसे में हमें अपना दायित्व पहचानना होगा।

अपनी संस्कृतिके बिना कोई भी राष्ट्र दुनिया में शक्ति का झंडा नहीं फहरा सकता। भारतीय जीवन मूल्य और संस्कृति को इस वैश्वीकरण ने कुछ हद तक हिला दिया है। वास्तव में ग्लोबलाईजेशन आंचलिकता, क्षेत्रीयता, स्थानीयता का धुर विरोधी है। असल में वैश्वीकरण 'एक रास्ता' लगता है। एक रास्ता, एक विश्व, एक व्यापार, एक संस्कृति, सब कुछ एक। और इसके चक्कर में भारतीय संस्कृति की मूल प्रकृति नष्ट हो रही है। वर्तमान फिल्मी 'रिमिक्स' गानों की तरह भारतीय संस्कृति भी रिमिक्स हो रही है। अब हाल यह है की यह तय कर पाना मुश्किल हो रहा है कि 'क्या भारतीय संस्कृति का अपना है और क्या गैर'।

आज हमारे सामने प्रश्न यह है की आखिर वैश्वीकरण को इस अल्ट्रा मॉडर्न युग में भारतीय संस्कृति की जरूरत किसे है? आज के समय की पीढ़ी के लिए सब कुछ एक खिचड़ी संस्कृति होता जा रहा है।लिव-इन-रेलेशनशिप की संख्या में वृद्धि तथा मल्टीप्लेक्स थियेटरों, वैलेंटाइन-डे, फ्रेंडशिप-डे आदि का प्रचलन इसका ही एक उदाहरण हैं। कहने को तो पूरा विश्व "एक गाँव" में तब्दील हो चुका है, परंतु वर्तमान की दूरियां बढ़ती ही जा रही है।

वैश्वीकरण विभिन्न समाजों की विविधता में वृद्धि करता है तथा बहुसंस्कृतिवाद को प्रोत्साहन प्रदान करता है। भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण के कारण संस्कृति को, भाषा को लाभ भी मिला है। जैसे की भाषा की गतिशीलता, सरल भाषा का अत्यधिक प्रसार जिसके कारण संप्रेषणीयता में वृद्धि होती है। आज बी.बी.सी. और डिस्कवरी जैसे बहुराष्ट्रीय चैनल अपने कार्यक्रम भारतीय संस्कृति पर बना रहें है और वो भी हिन्दी में। संस्कृति बदल ज़रूर रही है, परंतु वह किसी न किसी रूप में बरकरार रहती है। करीब 200 सालों का साम्राज्यवादी शासन भी इस भारतीय संस्कृति को जड़ से नष्ट नहीं कर पाया। यह वैश्वीकरण का ही प्रभाव है की वर्तमान में देश और विदेश में आयुर्वेद, योग, भारतीय दर्शन आदि बहुत प्रचलित हो रहा है, जो एक अच्छा सूचक है।

भारतीय सांस्कृतिक शक्ति लोगों को आकर्षित करती है। एक विचित्र-सी चीज़ भारतीय संस्कृति के पास है। वह है इसकी अविभाज्यता। हम संस्कृति को काट नहीं सकते। हम कला को नहीं हटा सकते। कविता को अलग नहीं कर सकते। यहाँ तक की निर्गुण और सगुण को नहीं काट सकते। कम से कम भारतीय संस्कृति के संदर्भ में यही सच है। भौगोलिक या क्षेत्रीय विशेषताओं में उसे सीमित कर सकते हैं, किन्तु उसकी भारतीय उपमहाद्वीपीय विस्तृति से हम उसे अलग नहीं कर सकते।वैश्वीकरण के दौर में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जीवित रहने के लिए हमारी संस्कृति को और मजबूत होना होगा, उसको अपनी जड़ो को और गहरा करना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. https://hi.wikipedia.org/wiki/**वैश्वीकरण**
2. **अमित कुमार सिंह**, **भूमंडलीकरण और भारत: परिदृश्य और विकल्प**, **सामयिक प्रकाशन**, **नयी दिल्ली**, **2010**, **पृष्ठ सं. 33**
3. **हिन्दी-विश्वकोश**, **खंड-12**, **पृष्ठ सं. 14**
4. **हिन्दी साहित्य कोश**, **पृष्ठ सं. 701-702**
5. **प्रो. यशपाल**, **उद्धृत अक्षर पर्व**, **मार्च 2004**, **नरेन का लेख**
6. **एन.सी.आर.टी.**, **वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था**, **पृष्ठ सं. 57**